International Journal of Sanskrit Research
अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(4): 339-340
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-05-2019
Accepted: 15-06-2019

ममता महेरा
शोध छात्रा, संस्कृत, डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलज, देहरादून, उत्तराखंड, भारत

Correspondence
ममता महेरा
शोध छात्रा, संस्कृत, डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलज, देहरादून, उत्तराखंड, भारत

महर्षि वाल्मीकि का प्रकृति चित्रण (रामायण के सन्दर्भ में)

ममता महेरा

प्रस्तावना

महर्षि वाल्मीकि व उनका काव्य 'वाल्मीकि रामायण' न केवल धार्मिक व सामाजिक तथा राजनैतिक परिप्रेक्ष्यों का ही समावेश करता है। अपितु सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो जिस प्रकृति चित्रण का विश्लेषण महर्षि ने रामायण में किया है। वह अन्य किसी काव्य में दृष्टिगत नहीं होता है। यही कारण है कि रामायण को आधार मानकर या लौकिक साहित्य को आधार मानकर जितनी भी साहित्यिक रचनाएँ हुई हैं। वे सब अधिकतर रामायण व महाभारत को ही आधार मानकर की गयी हैं। क्योंकि महर्षि ने सम्पूर्ण रामायण में प्रकृति का जो सजीव चित्रण किया है। वह ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे हमारे सामने बिल्कुल मानवीय रूप में उपस्ति हो।

प्रकृति का जो वर्णन रामायण में मिलता है। वह कहीं श्रृंगारिक भावनाओं को ओत–प्रोत करती है तो कहीं विभिन्न प्रकार की उपमाओं से दृष्टिगत होती है। और यह सब तभी सम्भव हो सकता है जब खुद लेखक या कवि ने, ऐसा अनुभव किया हो। प्राचीन काल से यह प्रकृति रही है कि ऋषि या सन्तों का रहन/सहन प्रकृति की गोद में खुले आवरण में, नदी के सामित्य व घने जंगलों में स्थापित आश्रमों में होता था, तो भला कैसे न वह प्रकृति का विश्लेषण करते। महर्षि वाल्मीकि भी जब सरयु नदी के तट पर स्नान करने जाते हैं और (निषाद वध) का दृश्य देखते हैं। और फिर वही सम्पूर्ण घटना रामायण का आधार बनकर लौकिक साहित्य का सर्जन करवाती है और रामायण जैसा महाकाव्य विश्व भर को पढ़ने को मिलता है। वास्तविक रूप से रामायण न भारतीय समाज व जीवन का ही धार्मिक ग्रन्थ नहीं है। बल्कि विश्व भर में इसे स्थान मिलता है। यही कारण है कि अपनी इसी विशिष्टता के कारण ही रामायण का विश्व की अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका है।

महर्षि की दृष्टि का यह प्रमाण है कि निर्जीव पर्वतों का जो सजीव वर्णन विशिष्ट उपमाओं से उन्होंने किया है तथा सजीव वृक्षों व लताओं का मानवीय रूप में वर्णन जो किया है ऐसा प्रतीत होता है कि ये वृक्ष पर्वत व लता न होकर मानवीय दर्शन है, यह एक कवि के कवित्व का ही परिचय है।

इसी विशिष्टता के साथ–साथ महर्षि ने रामायण में मैनाक पर्वत की उपमा देते हुई लिखा है कि–

> जातरूपमयैः श्रृ¯भ्राजमानैर्महाप्रभैः
> आदित्यषतसंकाषः सोऽभवद् गिरिसत्तमः।। [1]

अर्थात् उन परम कन्तिमान और तेजस्वी सुवर्णमय शिखरों से वह गिरीश्रेष्ठ मैनाक पर्वत सैकड़ों सूर्यों के समान देदीप्यमान हो रहा था।

और अपनी इस उपमामयी दृष्टि से उन्होंने अरिष्ठ पर्वत का भी विभिन्न नवीन श्रृंगारिक पदों से जो वर्णन किया है वह ऐसा प्रतीत होता है कि वास्तविक रूप से ये सब दृष्टिगत दृश्य ही रहा हो जैसे –

> बोध्यमानमिव प्रीत्या दिवाकरकरैः षुभैः।
> उन्मिषन्तमिवोद्धूतैर्लोचनैरिव धातुभिः।।
> तोयौधनिः स्वनैर्मन्दैूः प्राधीतमिव पर्वतम्
> प्रगीतमिव विस्पष्टं नाना प्रस्त्रवणस्वनैः।। [2]

अर्थात् उस अरिष्ट पर्वत का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सूर्य की कल्याणकारी किरणे प्रेमपूर्वक उसे जगमगाती सी जान पड़ती थी। नाना प्रकार की धातु मानों उसके खुले हुए नेत्र थे। जिससे वह सब कुछ देखता हुआ सा स्थिर था पर्वतीय नदियों की जलराशि के गम्भीर घोष से ऐसा लगता था मानो वह पर्वत सस्वर वेद पाठ कर रहा हो तथा अनेकानेक के कल–कल नाद से वह अरिष्ट पर्वत गीत सा गा रहा था। ऊँचे–ऊचे देवदार वृक्षों के कारण मानों हाथ ऊपर उठाये खड़ा था।

अतः साधारण शब्दों के कहा जाये तो महर्षि की लेखनी का ही चमत्कार है कि प्रकृति जो स्वयं में ही परिपूर्ण है। उसको भी माननीय आकार का श्रेय दिया है।

और भी पर्वतों जैसे– कैलास, पर्वत, हिमालय पर्वत, मलय पर्वत, ऋषभ पर्वत, उदय पर्वत आदि का वर्णन भी महर्षि ने विभिन्न प्रकार की उपमाओं के आधार पर किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये सभी स्थल दृश्यजन्य हो।

वही महर्षिकृत इस रामायण में नदियों, पठारों और तालाबों का वर्णन भी किया गया है। नदियों की सुन्दरता र्निमलता व शुद्धता का वर्णन करने के साथ ही साथ वे उन्हें मानवीय स्वरूप से परिचय करवाते हैं, जिससे महर्षि की काव्यता व विद्धता का परिचय मिलता है एक जगह पर महर्षि तमसा नदी का वर्णन करते हुए कहा है कि–

अकर्दममिंद तीर्थ भरद्वाज निषामय।
रमणीयं प्रसन्नाम्बु सन्मनुष्यमनो यथा।। [3]

अर्थात् महर्षि अपने शिष्य भारद्वाज से इस प्रकार कहते हैं कि भारद्वाज! देखो यहाँ का घाट बड़ा सुन्दर है। इसमें कीचड़ का नाम नहीं है। यहाँ का जल वैसा ही स्वच्छ है जैसा सत्पुरुषों का मन होता है।

साथ ही उन्होंने सम्पूर्ण महाकाव्य में गंगा, यमुना, सरयु, गोमती, तुंगभद्रा आदि नदियों का भी विशिष्ट वर्णन किया है। तथा उनकी सुन्दरता के साथ–साथ इनकी विशिष्टता व सौम्यता का भी वर्णन किया है।

सरयू नदी का वर्णन करते हुए कहते हैं कि ये जो नदी है यथा–

कैलासपर्वते राम मनसा निर्मित परम्।
ब्रह्मणा नरषार्दूल तेनेदं मानसं सरः।
तस्मात् सुस्त्राप सरसः सायोध्याभुपगूहते।
सरः प्रवृत्ता सरयूः पुण्या ब्रह्मसरष्च्युताः।। [4]

अर्थात् विश्वामित्र राम लक्ष्मण को सरयू की उत्पत्ति के विषय में बताते हैं कि नरश्रेष्ठ राम! कैलास पर्वत पर एक सुन्दर सरोवर है उसे ब्रह्माजी ने अपने मानसिक संकल्प से प्रकट किया है। मन के द्वारा प्रकट होने से वह ही उत्तम सरोवर 'मानस' कहलाया तथा उस सरोवर से एक नदी निकलती है जो अयोध्यापुरी से सटकर बहती है। ब्रह्मसर से निकलने के कारण वह पवित्र नदी सरयू के नाम से विख्यात है।

अतः अपनी काव्यमय कुशलता के कारण ही महर्षि ने पर्वतों पठारों नदियों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के वृक्षों व लताओं का भी वर्णन किया है। जिनमें चन्दन, तिलक, साल, तमाल अति मुक्तक, पद्यक, सरस और शोक आदि वृक्षों का वर्णन किया है तथा उन्होंने इसे मानवीय जीवन के लिए उपयोगी बताया है।

अतः यह सर्वविदित सत्य ही है कि रामायण में इन वृक्षों व जड़ी बुटियों को प्राण रक्षक की संज्ञा दी गयी है। राम लक्ष्मण का वह वृत्तान्त जिसमें मेघनाद से युद्ध के समय लक्ष्मण का मूर्छित होकर गिरना और अचेत अवस्था में रहना। हनुमान के द्वारा हिमालय पर्वत को उठाकर लाना और वैद्य की जड़ी बुटियों से लक्ष्मण को लाभ होना से यब वृत्तान्त वृक्षों व लताओं की महिमा को ही दर्शात हैं।

साधारण शब्दों में कहा जाय तो प्रकृति अपने आप में पूर्ण है। अपने को सुरक्षित रखना तथा जनसामान्य के लिए प्रकृति का त्याग ये सब पूर्व में ही निहित है। भला महर्षि वाल्मीकि जैसे विद्वान व्यक्ति कैसे इन पराकाष्ठाओं से अनभिज्ञ रह सकते थे, इसलिए ही महर्षि ने प्रकृति का सजीव, निर्जीव व मानवीय तथा उपमापूर्वक ज्ञान दिया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि महर्षि ने प्रत्येक काण्ड की रचना करते समय सामाजिक, राजनैतिक व धार्मिक सभी क्षेत्रों पर लेखनी तो चलाई परन्तु प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन व उसे सरस रूप से काव्य में जोड़ना ये उनका नया प्रयोग था। क्योंकि रामायण लौकिक काव्य है और प्रथम रचना भी रामायण के बाद जितने भी काव्य लिखे गये हैं। जैसे, कालीदास, भवभूति, भारवि आदि ने भी उन्हीं से सीख लेकर काव्य रचना में प्रकृति को मुख्य आधार माना है इसलिए साधारण शब्दों में कहा जाय तो महर्षि, व उनका काव्य 'वाल्मीकि रामायण' पूर्ववर्ती व परवर्ती काव्यों व कवियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। और एक संदेश प्रदान करने वाला काव्य है।

सन्दर्भ सूची

1. वा.रा.– सुन्दर काण्ड– 1/106
2. वा.रा.– सुन्दर काण्ड– 56/27, 29
3. वा.रा.– बा.का.– 2/5
4. वा.रा.– बा.का.– 24/8, 9